International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-10-2025, Accepted: 11-11-2025, Published: 26-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 103-105

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हिंदी भाषा की भूमिका

डॉ. पूजा रानी
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, आदमपुर, हिसार, हरियाणा, भारत

सारांश
भारत बहुभाषिकता की अनूठी परंपरा वाला देश है। लगभग 19,500 बोलियाँ और 22 अनुसूचित भाषाएँ भारतीय भाषिक विविधता का प्रमाण हैं। इनमें से हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, जिसके 52 करोड़ से अधिक मातृभाषी वक्ता और लगभग 70 करोड़ द्वितीय भाषा वक्ता हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP–2020) भारत की शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक सुधार के रूप में उभरी है, जिसमें भाषा को शिक्षा की आत्मा माना गया है। यह नीति भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी, को ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के मुख्य प्रवाह में लाने की दिशा में निर्णायक कदम है। हिंदी को शिक्षा, अनुसंधान, तकनीकी और सांस्कृतिक माध्यम के रूप में सशक्त बनाने का उद्देश्य इस नीति में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शिक्षा नीति में भाषा को केवल संवाद का माध्यम न मानकर सीखने की प्रकृति, कक्षा की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना, और संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख घटक माना गया है। इस संदर्भ में हिंदी भाषा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वह न केवल लाखों भारतीयों की मातृभाषा है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत की प्रमुख वाहक भी है । प्रस्तुत शोध लेख में NEP –2020 में हिंदी की भूमिका, उसकी शैक्षिक उपयोगिता, संभावनाएँ, चुनौतियाँ तथा भविष्य की दिशा का विस्तृत विवेचन किया गया है।

मूल शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, हिंदी भाषा, मातृभाषा, त्रिभाषा सूत्र, शिक्षा में समानता, अनुसंधान

प्रस्तावना

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति, विचार और संस्कृति की आधारशिला होती है। किसी भी देश की प्रगति उस देश की भाषाई आत्मनिर्भरता पर निर्भर करती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं का प्रयोग सदैव एक चुनौती रहा है। आज़ादी के बाद से ही अंग्रेज़ी माध्यम की प्रधानता ने भारतीय भाषाओं को विशेषकर उच्च शिक्षा से दूर रखा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP –2020) ने इस प्रवृत्ति को संतुलित करने का प्रयास किया है। पांच साल के परामर्श के बाद गठित एनईपी, 2020, जो 1986 की पिछली शिक्षा नीति की जगह लेती है, ने कहा है कि जहां तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक, लेकिन अधिमानतः कक्षा 8 और उसके बाद तक, सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों में छात्रों के लिए शिक्षा का माध्यम घरेलू भाषा या मातृभाषा या स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में होगा। इसके बाद, जहां तक संभव हो, घरेलू या स्थानीय भाषा को एक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। पूर्व भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष के. कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में एनईपी, 2020 को लिखने वाले विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि छोटे बच्चे अपनी घरेलू भाषा या मातृभाषा में गैर–तुच्छ अवधारणाओं को अधिक तेज़ी से सीखते और समझते हैं। एनईपी 2020 दस्तावेज़ में कहा गया है, "शोध से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि बच्चे दो और आठ साल की उम्र के बीच बहुत जल्दी भाषाएं सीख लेते हैं इस उद्देश्य से एनईपी में द्विभाषिकता (अंग्रेजी के साथ मातृभाषा) को अपनाने को प्रोत्साहित किया गया है। इस नीति में कहा गया है कि "ज्ञान की भाषा वह होनी चाहिए जो बच्चे की समझ की भाषा हो।" इस दृष्टिकोण से हिंदी, जो देश के अधिकांश भागों में संपर्क भाषा (link language) है, शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का प्रमुख माध्यम बन सकती है। नीति के प्रारंभिक भाग में ही यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि —

"The medium of instruction, wherever possible, shall be the mother tongue or local language up to at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond."[1]

यह वाक्य नीति के मूल दर्शन को दर्शाता है — शिक्षा का आधार वही भाषा होनी चाहिए जिसमें बच्चा सोचता और समझता है। इस संदर्भ में, हिंदी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह भारत के अधिकांश राज्यों में शिक्षण, संवाद और प्रशासन की प्रमुख भाषा है।

हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीयता की भावना, संस्कृति और सामाजिक एकता की वाहक है। अतः NEP –2020 हिंदी को केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि "शिक्षा के भारतीयकरण" के केंद्र में स्थापित करती है।

हिंदी विषय और शिक्षा नीति का आपसी संबंध

हिंदी विषय का अध्ययन परंपरागत रूप से साहित्य, भाषा–विज्ञान, व्याकरण और संप्रेषण कौशल पर केंद्रित रहा है। लेकिन NEP –2020 ने इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का अवसर दिया है। नीति के अनुसार, भाषा शिक्षा का उद्देश्य केवल भाषाई दक्षता नहीं, बल्कि बहुआयामी संप्रेषण कौशल, सांस्कृतिक समझ और आलोचनात्मक चिंतन (Critical thinking) का विकास करना है। इस दिशा में हिंदी विषय अब एक ष्भाषा विषय" से आगे बढ़कर एक "संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का माध्यम" बन रहा है। उदाहरण के लिए —

- हिंदी भाषा का प्रयोग अब केवल साहित्य अध्ययन तक सीमित नहीं रहेगा; बल्कि संवाद कौशल, मीडिया लेखन, अनुवाद, तकनीकी लेखन, और डिजिटल कंटेंट डेवलपमेंट तक इसका विस्तार होगा।
- नीति में यह भी प्रावधान है कि शिक्षण संस्थान बहुभाषिक वातावरण विकसित करें, जिसमें हिंदी एक "संपर्क भाषा" के रूप में विभिन्न भाषिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को जोड़ सके।
- इसके साथ ही, भाषा शिक्षण को केवल परीक्षा–केंद्रित न रखकर अनुभवात्मक शिक्षा (experiential learning) और प्रोजेक्ट–आधारित अध्ययन से जोड़ने की सिफारिश की गई है, जिसमें हिंदी के प्रयोग की भूमिका और भी बढ़ जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भाषा नीति (Language Policy in NEP –2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा के संदर्भ में एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है जो भारतीय भाषाओं की विविधता को सम्मान देता है। इसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

- **मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान:** नीति के अनुसार, कक्षा 5 (और जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा 8 तक) तक शिक्षण मातृभाषा या स्थानीय भाषा में होना चाहिए। इससे बच्चों को अपनी सोच और समझ में सहजता प्राप्त होती है।

- **त्रिभाषा सूत्र (Three Language Formula):** विद्यार्थियों को तीन भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया गया है— दो भारतीय भाषाएँ और एक अंतरराष्ट्रीय भाषा। इस दृष्टि से हिंदी एक सशक्त सेतु भाषा के रूप में उभरती है जो विभिन्न राज्यों को जोड़ सकती है।

- **भारतीय भाषाओं का संस्थानीकरण:** नीति में एक नई संस्था "भारतीय भाषा संस्थान" (Indian Institute of Translation and Interpretation) की स्थापना का प्रावधान है जो अनुवाद, शब्दावली विकास और शिक्षण सामग्री निर्माण का कार्य करेगी।

- **उच्च शिक्षा में भाषाई विकल्प:** इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन और कानून जैसे विषयों में भी भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

- **अनुवाद और डिजिटलीकरण:** तकनीकी और उच्च शिक्षा में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में ई–सामग्री, MOOCs और डिजिटल पुस्तकालयों का निर्माण किया जाएगा।

इन बिंदुओं से स्पष्ट है कि NEP –2020 शिक्षा में भाषा को केवल माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान–सृजन का उपकरण मानती है। हिंदी विषय का प्रयोग अब ज्ञान के प्रसार, नवाचार, और शोध में भी किया जा सकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) और राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NPTEL) जैसे संस्थान हिंदी में ई–सामग्री विकसित करने पर कार्यरत हैं, जिससे यह भाषा उच्च शिक्षा और अनुसंधान में समान रूप से प्रभावशाली बन रही है।

हिंदी भाषा की भूमिका और उपयोगिता

- **शिक्षण माध्यम के रूप में हिंदी:** हिंदी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह देश के बड़े हिस्से में बोली, समझी और स्वीकार की जाती है। हिंदी में शिक्षा से न केवल विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता बढ़ेगी, बल्कि शिक्षा अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक बनेगी। शोध बताते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करते समय अधिक आत्मविश्वासी और रचनात्मक होते हैं (UNESCO Report, 2021)। हिंदी के माध्यम से विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों की शिक्षा बच्चों की समझ के स्तर पर सरल की जा सकती है।

- **अनुसंधान और उच्च शिक्षा में हिंदी की भूमिका:** अब तक अधिकांश शोध अंग्रेज़ी में किए जाते रहे हैं, जिससे हिंदी माध्यम के छात्रों की भागीदारी सीमित रही। NEP –2020 इस स्थिति को बदलने का अवसर प्रदान करती है। हिंदी में शोध पत्र, पीएच.डी. प्रबंध, और तकनीकी ग्रंथों का प्रकाशन बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालयों को प्रेरित किया जा रहा है।

- **डिजिटल शिक्षा में हिंदी:** राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (NDEAR), SWAYAM, और Diksha जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स पर हिंदी माध्यम में सामग्री विकसित की जा रही है। इससे ग्रामीण और अर्द्ध–शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी डिजिटल शिक्षा तक समान पहुँच मिलेगी।

- **राष्ट्रीय एकता में भूमिका:** हिंदी भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती है। शिक्षा के माध्यम से हिंदी का उपयोग राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना में सहायक होगा।

हिंदी भाषा की NEP –2020 में संभावनाएँ

- **ज्ञान–विस्तार का माध्यम:** हिंदी में विभिन्न विषयों—विज्ञान, तकनीकी, समाजशास्त्र, प्रबंधन—की सामग्री तैयार करने से ज्ञान के दायरे का विस्तार होगा।

- **रोजगार अवसर:** हिंदी में शैक्षिक सामग्री, अनुवाद, संपादन और कंटेंट डेवलपमेंट के क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे।

- **वैश्विक मंच पर हिंदी का प्रसार:** आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के उपयोग से यह वैश्विक संप्रेषण की भाषा बन सकती है।

- **ई–गवर्नेंस और टेक्नोलॉजी में एकीकरण:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) में हिंदी के लिए सॉफ्टवेयर टूल्स विकसित किए जा रहे हैं।

- **सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय पहचान:** हिंदी भारतीयता का प्रतीक है; शिक्षा में इसका विस्तार देश की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करेगा।

हिंदी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ

- **गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री की कमी:** हिंदी में उच्चस्तरीय तकनीकी, वैज्ञानिक और व्यावसायिक विषयों की पुस्तकें पर्याप्त नहीं हैं।

- **अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली की समस्या:** अनेक विषयों के तकनीकी शब्दों का सही अनुवाद और उपयोग सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण है।

- **अंग्रेज़ी की सामाजिक प्रतिष्ठा:** रोजगार और उच्च शिक्षा में अंग्रेज़ी की प्राथमिकता हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए बाधा बनती है।

- **शिक्षक प्रशिक्षण की कमी:** हिंदी माध्यम में तकनीकी विषय पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है।

- **नीति के क्रियान्वयन की गति:** नीति के सैद्धांतिक प्रावधानों को जमीनी स्तर पर लागू करने में समय और संसाधनों की आवश्यकता है।

समाधान और भविष्य की दिशा

- **द्विभाषिक शिक्षा मॉडल:** उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों में सामग्री उपलब्ध कराई जाए।
- **हिंदी में तकनीकी शब्दकोष का विकास:** आयोग और विश्वविद्यालय मिलकर मानक शब्दावली विकसित करें।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:** तकनीकी विषयों के शिक्षकों को हिंदी माध्यम में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।
- **डिजिटल संसाधनों का निर्माण:** हिंदी में ऑनलाइन कोर्स, ई–बुक्स, और डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण किया जाए।

- **अनुसंधान प्रोत्साहन:** हिंदी में किए गए शोध को प्रोत्साहन, अनुदान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी जाए।
- **साझेदारी और सहयोग:** हिंदी विश्वविद्यालय, NCERT, AICTE, और IGNOU जैसे संस्थान मिलकर हिंदी में अध्ययन सामग्री तैयार करें।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा को भारतीय भाषाओं की जड़ों से जोड़ने का प्रयास है। हिंदी, देश की सबसे व्यापक संपर्क भाषा होने के नाते, इस नीति के क्रियान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभा सकती है। शिक्षा का भारतीयकरण तभी संभव है जब ज्ञान अपनी भाषा में उपलब्ध हो। हिंदी में शिक्षा देने से न केवल शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ेगी, बल्कि विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और सृजनात्मकता भी विकसित होगी। भविष्य की दिशा यह होनी चाहिए कि हिंदी में अधिकाधिक तकनीकी और वैज्ञानिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए, ताकि यह भाषा केवल साहित्य की नहीं, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की भी भाषा बन सके।

संदर्भ

1. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, 2020।
2. यूनेस्को (2021). The Importance of Mother Tongue&Based Education. Paris: UNESCO Publications.
3. विश्व हिंदी सचिवालय (2022). हिंदी और नई शिक्षा नीति. मॉरीशस।
4. शर्मा, संजय (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएँ. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
5. कुमार, रामनिवास (2022). हिंदी भाषा का भविष्य और राष्ट्रीय नीति. भारतीय उच्च शिक्षा समीक्षा पत्रिका।
6. Mishra, Pankaj (2021). "Language, Equity and Education in NEP –2020." Indian Journal of Education Policy, Vol. 9(3).
7. Wadhwa, Neelam (2021). "Role of Indian Languages in NEP –2020." Journal of Language and Education Policy, Vol. 5(2), pp. 45–53.
8. Joshi, Nirmala (2020). Hindustani Bhasha aur Shiksha ke Naveen Disha Nirnay. Allahabad: Gyan Ganga Publications.
9. Pandey, Rajesh (2023). "Digital Learning in Hindi: Challenges and Opportunities." Education and Society, Vol. 11(1), pp. 60–74.
10. Sinha, Anil (2022). Hindi mein Takniki Shiksha: Chunautiyan aur Sambhavnayein. Delhi: Sahitya Bhawan.